स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

सालिम अली की फ्रूट बैट

यह भारत की स्थानीय प्रजाति है। सर्वप्रथम फ्रूट बैट (*लैटिडेंस सालिमअली*) की खोज देश के पश्चिमी घाट वाले इलाके में 1948 में की गई। बाद में इसका नाम भारतीय पक्षी विज्ञानी सालिम अली के नाम पर किया गया। यह गंभीर रूप से लुप्तप्राय जीवों की सूची में शामिल है।

ये मध्यम आकार के (लंबाई 10 से.मी.) और बिना बाहरी पूंछ के होते हैं। इनका सिर काले-भूरे रंग के फर से ढंका होता है। ये गूलर के फल खाना पसंद करते हैं।

फ्रूट बैट की संख्या के बारे में हमारे पास बहुत ही कम जानकारी है। अगोरमूर्ति, तथा सिंगारवेलान और मरिमुथु ने एक गुफा में किए गए निरीक्षण के बाद इनकी संख्या 250-350 बताई थी। वनिता रानी और उनके साथियों द्वारा किए गए सर्वेक्षण में इनकी संख्या 50-400 के आसपास थी। हाल ही में वहां की जनसंख्या में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। इन्हें सबसे ज़्यादा खतरा स्थानीय लोगों से है जो इनके तेल का उपयोग दमा के पारंपरिक इलाज में करते हैं। कॉफी बागानों के लिए हो रही पेड़ों की कटाई ने भी इस प्रजाति के लिए खतरा पैदा कर दिया है।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी